विश्व न्याय मंदिर

रिज़वान 2005

विश्व के बहाइयों को

परमप्रिय मित्रगण,

रचनात्मक काल के पांचवे चरण के आरंभ से ही बहाई जगत को जो उल्लेखनीय सफलतायें मिली हैं उन्होंने हमें अपरिमित आनंद प्रदान किया है। पिछले बारह महीने भी इससे अलग नहीं रहे। बहाई समुदाय ने अपना प्रणालीबद्ध विकास जारी रखा है और अब, जब यह पाँच वर्षीय योजना के अंतिम वर्ष में प्रवेश कर रहा है, अपने को एक सुदृढ़ अवस्था में पा रहा है-एक ऐसी सुदृढ़ता जो समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को गति देने में लगे विश्व के हर कोने के मित्रों के अनवरत, अथक और अतुलित परिश्रम तथा प्रयासों का सुफल है।

हो रहे विकास के पूरे महत्व का वर्णन करना जबकि अपर्याप्त होगा, आंकड़ों से उपलब्धियों की अनंत संभावनाओं का पता चलता है। प्रभुधर्म के मानव संसाधनों में क्रमिक रूप से संख्यात्मक वृद्धि हुई है। विश्व भर में 200,000 से भी अधिक अनुयायी रूही संस्थान की पुस्तक-1 का अध्ययन पूरा कर चुके हैं और कई हजार लोग उस स्तर तक पहुंच चुके हैं जहाँ वे स्टडी सर्कल के कुशल शिक्षक के तौर पर प्रभावशाली कार्य कर सकते हैं। स्टडी सर्कल की संख्या विश्व भर में तेजी से बढ़ रही है और पिछली गणना के अनुसार 10,000 से ऊपर पहुंच चुकी है। प्रभुधर्म की मुख्य गतिविधियों से जुड़े जिज्ञासुओं की संख्या में भी लगातार वृद्धि हो रही है, कई महीने पहले यह 100,000 का स्तर भी पार कर चुकी है। इस बीच, 150 से भी अधिक समुदायसमूह उस स्तर तक विकसित हो चुके हैं जब उनके बीच सघन विकास कार्यक्रम या तो शुरू हो चुके हैं या फिर शुरू किये जाने वाले हैं। प्रत्येक संकेत से यह स्पष्ट है कि योजना के अंत तक यह संख्या अनुमानों को पार कर जाएगी।

इन उपलब्धियों पर उल्लसित होते समय हमें सीखने की उस प्रक्रिया को भी समान रूप से मान्यता देनी चाहिये जिसने हमें बढ़ावा दिया है। सघन संस्थान अभियान, जो अपेक्षित अभ्यास पर पर्याप्त ध्यान देते हैं, समुदायसमूह के स्तर पर विकास को प्रेरित करने के साधन बने रहे हैं। अब जब कि आवश्यक स्थितियाँ तैयार की जा चुकी है, इनके अनुरूप प्रभुधर्म के विस्तार और सुगठन के कार्यक्रम आरंभ किये गये हैं। विकास के सघन कार्यक्रमों के स्वरूप से सम्बन्धित लोगों की समझ बढ़ रही है और अब इन प्रयासों की मुख्य बातों को अच्छी तरह समझा जाने लगा है। इन कार्यक्रमों के अंतर्गत कई चक्रों की एक श्रृंखला होती है,

प्रत्येक चक्र कई महीनों की अवधि का होता है, जिसमें योजना, विस्तार और सुगठन के कार्य किये जाते हैं। यह सुनिश्चित करते हुए कि विकास की प्रक्रिया न केवल जारी रहे, बल्कि उत्तरोत्तर इसकी गति भी तेज हो, मानव संसाधन विकास एक चक्र से दूसरे की ओर निर्बाध रूप से अग्रसर रहता है। निसंदेह अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है, लेकिन जो अनुभव प्राप्त हो चुके हैं, उनसे यह सम्भव हो पाया है कि की गई पहल को, पूरी दुनिया में समुदायसमूहों की निरन्तर बढ़ रही संख्या के बीच दोहराया जाये।

यह वास्तव में, संतोष का विषय है कि प्राप्त विजय संख्यात्मक और गुणात्मक महत्व की है। विश्व के हर स्थान पर बहाई समुदाय के जीवन में लगातार हो रहा आध्यात्मिक विकास ही इन उपलब्धियों के मूल में केन्द्रित है। यह नई आध्यात्मिक ऊर्जा ही भक्तिपरक बैठकों, बच्चों की कक्षाओं तथा स्टडी सर्कल में विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों की बढ़ती भागीदारी का कारण रही है और इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोगों ने बहाउल्लाह को इस युग के लिये ईश्वर के प्रकटीकरण के रूप में स्वीकार किया और उनके प्रति अपनी आस्था व्यक्त की।

इसी के अनुरूप विश्व केन्द्र में कुछ नये परिवर्तन अस्तित्व में आये हैं। हमने निर्णय लिया है कि यह अनुकूल समय है जब दुनिया भर में स्थापित हुक़ूक़ुल्लाह के क्षेत्रीय और राष्ट्रीय न्यासी मंडलों को मार्गनिर्देश देने और उनके कामों की देख-रेख करने के लिये एक अंतर्राष्ट्रीय हुक़ूक़ुल्लाह न्यासी मंडल को अस्तित्व में लाया जाये। यह मंडल मुख्य ट्रस्टी, धर्मभुजा डा. अली मुहम्मद वर्ग़ा के साथ मिलकर काम करेगा और अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन में उनके अनुभवों का लाभ उठायेगा। इस अंतर्राष्ट्रीय न्यासी मंडल के अभी नियुक्त किये गये तीन सदस्य हैं-सैली फू , रामीन खादेम और ग्रांट वाल्हेम। इस मंडल के कार्यकाल के बारे में बाद में फैसला किया जायेगा। मंडल के सदस्य अपना आवास पवित्र भूमि में स्थानांतरित नहीं करेंगे बल्कि अपने कार्यों के निर्वहन के लिए विश्व केन्द्र में अवस्थित हुक़ूक़ुल्लाह कार्यालय की सेवाएँ लेंगे।

प्रत्येक दिशा मंे हर स्तर पर प्रभुधर्म की उल्लेखनीय प्रगति हो रही है-बिल्कुल निचले स्तर पर विस्तार और सुगठन से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थागत विकास तक। बहाई समुदाय में बढ़ती एकजुटता के ये उत्साहित करने वाले संकेत उस समय सामने आये हैं, जब दुनिया भर में समाज के विघटन और पतन की घटनाएँ साफ नज़र आ रही हैं। आज विश्व पतन और अनैतिकता के जिस जाल में उलझ गया है, यहाँ उसकी समीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन यह सच्चाई नहीं भुलाई जानी चाहिये कि इन्हीं परिस्थितियों के कारण प्रभुधर्म की शिक्षाओं के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ती है और उनके प्रचार-प्रसार के नये अवसर सृजित होते हैं।

26 नवम्बर 1999 के अपने संदेश में हमने प्रभुधर्म के रचनात्मक काल की पहली शताब्दी के अंतिम वर्षों तक बहाई समुदाय के लिए विश्व स्तर पर निर्धारित अभियानों की श्रृंखला का उल्लेख किया था। हमने संकेत दिया था कि प्रत्येक योजना प्रभुधर्म को समूहों द्वारा स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को गति देने के मुख्य उद्देश्य पर ध्यान केन्द्रित करेगी। इस श्रृंखला में मौजूदा पहली पांच वर्षीय योजना अगले 12 महीनों की छोटी-सी अवधि में सम्पन्न हो जायेगी, जब हम बहाउल्लाह के अनुयायियों का आह्वान अगली पाँच वर्षीय योजना की शुरूआत करने के लिये करेंगे। इस बीच की अवधि के लिए मित्रों से हमारा आग्रह है कि वे अपनी समस्त ऊर्जा, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र द्वारा प्रेरित सीखने के प्रणालीबद्ध तरीकों को प्रभावशाली ढ़ंग से कार्यरूप देने में लगायें। योजना के शेष बचे दिनों में उपलब्ध कराये जा रहे अनमोल अवसरों का लाभ उठाने से कोई भी बहाई न चूके, ताकि अगले रिज़वान एक अधिक महत्वाकांक्षी अभियान की आधारशिला रखी जा सके। पवित्र समाधियों पर अर्पित हमारी सर्वाधिक गहन प्रार्थनाएँ आपके साथ हैं।

-विश्व न्याय मंदिर